www.thearyasamaj.org

Vol.10January'17 No.6
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

www.thearyasamaj.org

अमर रहे गणतन्त्र हमारा

-कृष्णामित्र

यह गणतंत्र धरोहर कल के तुतलाते-से बचपन की
यह गणतंत्र धरोहर खिलते, मदमाते-से यौवन की।
इसके लिए समर्पित कर दें नभ के चाँद सितारों को
इसके लिए निमंत्रित कर लें खिलती हुई बहारों को।
गौरवशाली वसुन्धरा का कण-कण पावन चन्दन है
इसके बलिदानी अतीत का वन्दन है, अभिनन्दन है।
यह स्वातंत्र्य समर के अनगिन वीर जवानों की धरती
संगीनों की, तलवारों की, तीर कमानों की धरती।
इसके लिए समर्पित कर दें अनगिन शीश कतारों को
इसके लिए निमंत्रित कर लें बिजली को, अंगारों को।
परम्पराओं, मर्यादाओं, आदर्शों का मन्दिर है
गुरुद्वारा यह है गुरुओं का, मस्जिद है, गिरजाघर है।
आंगन में तुलसी के बिरवे, गागर में गंगाजल है
अनुभव का आशीष लुटाता, वत्सलता का आंचल है।
इसके लिये समर्पित कर दें सुन्दरतम श्रृंगारों को
इसके लिये निमंत्रित कर लें पैगम्बर-अवतारों को।
गाती हुई जवानी की यह अनगायी-सी धड़कन है
यह सुकुमार कथा, नानी के अंक-मिली चंचलता है
घूंघट की बेदी की रिमझिम प्यार-भरी विह्वलता है।
इसके लिये समर्पित कर दें पायल की झंकारों को
इसके लिये निमंत्रित कर लें प्यार भरी मनुहारों को।
कोई तानाशाह अगर फिर, लिखना चाहे नयी कथा
राजदर्प के मद में कोई, बाँटे पीड़ा, दर्द, व्यथा।
इसके सुमन सुवासित उपवन पर कोई अधिकार करे
आंगन में अंगार बिखेरे, खेतों में बारूद भरे।
इसके लिए समर्पित कर दें अनुबन्धित अधिकारों को
इसके लिये निमंत्रित कर ले गर्वीली असिधारों को।।

HAPPY NEW YEAR 2017

www.thearyasamaj.org

Brahmarpan January'17 Vol. 10 No.6
पौष–माघ 2073 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. अमर रहे गणतन्त्र हमारा 2
–कृष्णामित्र
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 8
–डॉ. भारत भूषण
4. सूर्य संस्कृति का पर्व लोहड़ी और मकर संक्रांति 9
5. शारदा देश कश्मीर–जो कभी संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा 11
–डॉ. भवानीलाल भारतीय
6 स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को सादर स्मरण 15
(तेरहवीं पुण्यतिथि 30 जनवरी पर)
–डॉ. महेश विद्यालंकार
7. मेरे सपनों का भारत 19
–स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री
8. गणतंत्र देश में जरूरी है समान नागरिक संहिता लागू करना 29
–शिवकुमार गोयल
9. Caste in the Rig Vedic Society 33
-N.K. Chaudhary

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION
C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
email:deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar,
Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

संपादकीय

रेलयात्रियों की सुरक्षा के लिए कौन उत्तरदायी?

कानपुर के निकट पुखरियाँ रेल दुर्घटना से पूरा देश स्तब्ध रह गया। एक ओर तो देश में बुलेट ट्रेन चलाने का सपना दिखाया जा रहा है दूसरी ओर रेल का बुनियादी ढाँचा इतना चरमरा रहा है कि वह लोगों की जान के लिए खतरा बन गया है। पुखरियाँ में रविवार 21 नवंबर 16 तड़के इंदौर-पटना एक्सप्रेस के 14 डिब्बे जिस तरह रेल लाइन से उतरे वह एकदम लापरवाही का परिणाम है। इस दुर्घटना में 150 लोगों की जान गई। ड्राइवर ने अपनी रिपोर्ट में इस हादसे का कारण लर्चिंग को बताया अर्थात् गाड़ी पटरी पर डगमगा रही थी। कुछ समय से गार्ड ऐसा अनुभव कर रहे थे पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। इस हादसे में गाड़ी की बीच की बोगियाँ पलटी थीं, अतः पटरियों में दरारें पड़ जाने को दुर्घटना का कारण माना गया। सामान्यतः मुख्य लाइनों की अल्ट्रासोनिक वॉल डिटेक्शन डिवाइस से नियमित जाँच की जाती है परन्तु दूसरी लाइनों की कभी-कभार ही जाँच होती है और उन पर गाड़ियाँ चलाई जाती रही हैं। इन लाइनों पर सवारी गाड़ियों के अलावां ओवरलॉडेड माल गाड़ियाँ भी चलती हैं। इससे पटरियों के टूटने का खतरा बढ़ जाता है। इस समय रेलवे में सेफ्टी और सिक्योरिटी डिवीजन में लगभग डेढ लाख पद खाली हैं। रेल सुरक्षा से जुड़ी रिपोर्टों में से अधिकांश क्रियान्वित नहीं हो पाई हैं। उनकी स्थिति निम्न प्रकार हैं-

1. 1954 में जस्टिस शाहजहाँ समिति ने रेलवे के संचालन में सुरक्षा के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए नीति में सुधार के लिए कुछ सुझाव दिए थे।

वर्तमान स्थिति (Status) उनका कार्यान्वयन नहीं हुआ।

2. 1962 में जस्टिस कुंजरू समिति ने सिफरिश की थी कि डीजल और इलेक्ट्रिक लोको पायलटों के संवर्ग (Cadre) को अलग कर दिया जाए।

वर्तमान स्थिति (Status) अभी तक कार्यान्वयन नहीं हुआ।

3. 1968 में जस्टिस वांचू समिति ने भी डीजल और इलैक्ट्रिक के लोकों पायलटों के संवर्ग को अलग करने की सिफारिश की थी।

वर्तमान स्थिति (Status) इसका भी कार्यान्वयन नहीं हुआ।

4. 1978 में जस्टिस सीकरी समिति ने रेलवे सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए और अधिक धन राशि लगाने की सिफारिश की।

वर्तमान स्थिति (Status) समिति के सुझावों का कार्यान्वयन नहीं हुआ।

5. 1998 में जस्टिस एच.आर. खन्ना समिति की रिपार्ट

वर्तमान स्थिति (Status) 278 में से 169 सुझाव स्वीकार कर लिए गए, 70 सुझाव अंशतः स्वीकार किए गए। सुरक्षा विनियामक (रेगुलेटर) के मूल सुझाव स्वीकार नहीं किए गए।

6. 2001 में जस्टिस सगीर अहमद पैनल को हावड़ा-अमृतसर मेल दुर्घटना की जाँच के लिए स्थापित किया गया।

वर्तमान स्थिति (Status) अभी भी विचाराधीन है।

7. 2004 में जस्टिस जी. सी. गर्ग पैनल की स्थापना गोल्डन टेंपल और सियालदह एक्सप्रेस दुर्घटना की जाँच के लिए की गई।

वर्तमान स्थिति (Status) अब भी विचाराधीन है।

8. 2012 में अनिल काकोडकर की अध्यक्षता में सुरक्षा पुनरीक्षण समिति की स्थापना की गई थी।

वर्तमान स्थिति (Status) 106 में से 68 सिफारिशें स्वीकार कर ली गईं। 19 सिफारिशें अस्वीकार कर दी गईं। केवल 27

www.thearyasamaj.org

सुझाव कार्यान्वित किए गए।

ऐसे हादसों को रेलवे कैसे टाल पाएगी?

इससे पूर्व घोषणाएँ तो बहुत हुईं परन्तु इन पर कार्रवाई वास्तविकता से बहुत दूर है। कानपुर में हुई भयंकर दुर्घटना ने एक बार फिर रेलवे प्रशासन की जीरो टॉलरेंस पोलिसी की वास्तविकता उजागर कर दी। इससे इतना तो स्पष्ट है कि यात्रियों की सुरक्षा के लिए जो कुछ किया जाना चाहिए, वह नहीं हो रहा है।

सन् 1988 से 2016 तक हुई कुछ बड़ी रेल दुर्घटनाएँ निम्नलिखित हैं।

1. 28 मई, 2010 : बंगाल के पश्चिमी मिदनापुर जिले में नक्सली हमले से ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस पटरी से उतरी। इसमें 148 लोगों की मृत्यु हुई।

2. 9 सितंबर 2002 : महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में हावड़ा-दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस के 14 डिब्बे धाबी नदी में गिर गये, इससे 100 यात्रियों की मौत हो गई।

3. 2 अगस्त 1999 को असम के गायसल में गाड़ियाँ आपस में टकरा गईं, इस दुर्घटना में 250 यात्रियों की मृत्यु हो गई।

4. 26 नवंबर 1998 : पंजाब के खन्ना स्टेशन पर सियालदह एक्सप्रेस की फ्रंटियर मेल के पटरी से उतरे डिब्बों से टक्कर हो गई, इसमें 212 यात्रियों की जान गई।

5. 14 सितंबर 1997 : मध्यप्रदेश के बिलासपुर के पास अहमदाबाद-हावड़ा एक्सप्रेस के पाँच डिब्बे नदी में गिर गए, इसमें 81 की मौत हुई।

6. 20 अगस्त 1995 : उत्तरप्रदेश में फिरोजाबाद स्टेशन के पास पुरुषोत्तम एक्सप्रेस और कालिन्दी एक्सप्रेस में टक्कर हो गई, इसमें 400 यात्री मारे गए।

7. 18 अप्रैल 1988 : उत्तरप्रदेश में ललितपुर के पास कर्नाटक एक्सप्रेस पटरी से उतर गई, इसमें 75 यात्रियों की मौत हुई।

8. 8 जुलाई 1988 : केरल में आईलैंड एक्सप्रेस अशतामुदी झील में गिर गई, इसमें 107 यात्रियों की मौत हो गई।

9. 21 नवम्बर 2016 : कानपुर के पास पुखरियाँ में इंदौर–पटना एक्सप्रेस की वर्तमान दुर्घटना में 14 बोगियाँ पटरी से उतर गई। इसमें 150 लोग मारे गए।

2016–17 की इस अवधि में 80 छोटी–बड़ी दुर्घटनाएँ हो चुकी हैं, इनमें 415 लोगों की मृत्यु हो गई। रेलवे प्रशासन को यात्रियों की सुरक्षा के लिए विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

इन दुर्घटनाओं का मुख्य कारण परंपरागत इंडियन कोच फैक्टरी के कोच हैं।

भारतीय रेलवे के सूत्रों के अनुसार अधिकांश रेल दुर्घटनाएँ इंडियन कोच फैक्टरी के डिब्बों के कारण होती हैं। इन कोचों के स्थान पर एल.एच.बी. (लिंके हॉफमेन बुश) कोच बनाने का काम शुरु हो चुका है। परन्तु इन कोचों के निर्माण में 15 साल लग जाएँगे। परंपरागत कोचों का जीवनकाल भी 30 साल होता है, अतः इन्हें हटाने में भी पर्याप्त समय लगेगा।

रेलपटरी की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है।

रेल पटरी टूटी हुई है या नहीं इसका पता लगाने के लिए भी रेलवे नई तकनीक का प्रयोग कर रही है। यह प्रयोग भी रेलवे के दो डिवीजनों ने हाल ही में शुरु किया है। इस तकनीक को अल्ट्रासोनिक ब्रोकन रेल डिटेक्शन सिस्टम कहा जाता है। इससे इंजीनियरों को पता चल जाता है कि रेल पटरी में कहाँ दरार है। इस पर 8–10 लाख रुपए प्रति कि. मी. खर्च आता है। जैसे भी हो रेलयात्रियों की सुरक्षा के लिए तकनीकी साधनों का यथासंभव अधिक प्रयोग करना चाहिए और हताहत याात्रियों को समुचित मुआवजा देना चाहिए। इसके अतिरिक्त सभी यात्रियों का बीमा होना चाहिए।

संपादक

www.thearyasamaj.org

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-108)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

आत्मा की सिद्धि में सूत्रकार अगले सूत्र में एक अन्य हेतु प्रस्तुत करता है, सूत्र है-

भोक्तृभावात्।।108।।

अर्थ- (भोक्तृभावात्) भोक्ता होने से।

भावार्थ- सारा अचेतन त्रिगुणात्मक जगत् भोग्य है, इसकी उपयुक्तता व सफलता उसी समय है। जब इसका कोई भोक्ता हो। अचेतन भोग्य जगत् का कोई भोक्ता होना चाहिए। अचेतन भोग्य जगत् का कोई चेतन भोक्ता स्वीकार करना आवश्यक है। स्वयं भोग्य, भोक्ता नहीं हो सकता, इसलिए अचेतन प्रकृति के अतिरिक्त चेतन आत्मा को सांख्यादर्शन में भोक्ता स्वीकार किया गया है। इस प्रकार प्रकृति का भोक्ता होने के कारण आत्मा की सिद्धि होती है।।108।।

दी हिबिस्कस,
बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी
सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009
फोन-0124-4948597

देश का सम्मान

स्वामी रामतीर्थ जापान गए। एक लंबी रेल यात्रा के बीच उनका फल खाने का मन हुआ। गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी पर उन्हें फल नहीं मिले। उनके मुँह से निकला, "जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते।" एक जापानी युवक ने उनके शब्द सुन लिए। अगले स्टेशन पर वह तेजी से उतरा और कहीं से एक टोकरी में ताजे मीठे फल ले आया। उसे स्वामी रामतीर्थ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए बोला। "लीजिए, आपको इसकी जरूरत थी।" स्वामी जी ने उसे फलवाला समझकर पैसे देने चाहे लेकिन उसने नहीं लिए। स्वामी जी के बहुत आग्रह करने पर उस जापानी युवक ने कहा, "स्वामी जी, इसकी कीमत यही है कि आप अपने देश में किसी से यह न कहें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।" स्वामी रामतीर्थ युवक का यह उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए। भारत लौटकर उन्होंने यह कहानी यहाँ के युवकों को बार-बार सुनाई।

सूर्य संस्कृति का पर्व लोहड़ी और मकर संक्रांति

हिन्दू धर्म में हर पर्व किसी न किसी देवता से संबद्ध है। जैसे शिव के उपासक शैव संस्कृति के अनुयायी हैं, विष्णु को मानने वाले वैष्णव कहलाते हैं। इसी तरह सूर्य को अपना आराध्य देव मानने वाले सूर्य संस्कृति के पूजक कहे गए हैं। सूर्य की उपासना के लिए उत्तरायण पर्व यानि मकर संक्रांति मनाई जाती है।

इस दिन सूर्य का प्रवेश मकर राशि में होता है। क्रांति बाहरी दुनिया में भी होती है और मनुष्य के भीतर भी। बाहरी क्रांति में आम तौर पर हिंसा होती हैं। और शक्ति का प्रयोग भी होता है। लेकिन आध्यात्मिक क्रांति सबकी भलाई का संदेश देती है। सभी साथ-साथ रहें, सबकी आजीविका निर्विघ्न चलती रहे, सब शक्तिमान हों, सत्कर्मों से जो कुछ भी हमें मिले, वह हमारा तेज बने। यही मकर संक्रांति का संदेश है। यह एक खगोलीय घटना (सूर्य का मकर राशि में स्थापित होना) के साथ अपने भीतर भी बदलाव लाने की कोशिश की अभिव्यक्ति है।

मकर संक्रांति से एक दिन पहले वसंत पूर्व का त्योहार लोहड़ी उत्तर भारत और खास तौर से पंजाब में मनाई जाती है। मकर संक्रांति के दिन तमिल हिंदू पोंगल का त्योहार मनाते हैं। असम में बीहू के रूप में यह त्योहार मनाने की परंपरा है। किसी न किसी नाम से मकर संक्रांति के दिन या उससे आगे-पीछे इस तरह का एक त्योहार भारत के विभिन्न प्रदेशों में अवश्य मनाया 'जाता है।

सूर्य की गति से संबंधित होने के कारण इन त्योहारों का संबंध अपने आप ऋतु चक्र और फसलों से जुड़ जाता है। पूरे भारत में यह विविध रूपों में मनाया जाता है। आज के दिन तिल, जल स्नान और दान का बहुत माहात्म्य है।

दक्षिणायन को देवताओं की रात अर्थात् नकारात्मकता और उत्तरायण को देवताओं का दिन यानी सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। प्रकारांतर से हम इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि दक्षिणायन में रातें सुखद होती हैं तो उत्तरायण में दिन

www.thearyasamaj.org

बेहतर होते हैं। वैदिक काल में उत्तरायण को देवयान और दक्षिणायन को पितृयान कहा जाता था। मान्यता है कि इस दिन पुण्य, आत्माएँ ही स्वर्ग में प्रवेश करती हैं, इसलिए यह आलोक का पर्व है। मकर संक्रांति के दिन पतंगबाजी की जाती है। भारतीय संस्कृति में पंचदेवों की पूजा का माहात्म्य है। पौराणिक के मतानुसार शिव, विष्णु और उनके अवतार, गणपति, आद्यशक्ति और सूर्य इन पंचदेवों की पूजा, उपासना, आराधना और जप से जपकर्ता को लौकिक, पारलौकिक, नैतिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार के लाभ मिलते हैं। संकल्प बल को तेज करने वाला मकर संक्रांति पर्व ऐसा है कि भीष्म पितामह जैसे महायोद्धा ने 58 दिन तक इस दिन की प्रतीक्षा करने के बाद प्राण त्यागे।

सूर्य आत्म देव के प्रतीक हैं, यानि हमारी आत्मा में जो देवत्व निहित है, उसके प्रतीक। सूर्य ज्ञान, ओज और तेज के प्रतीक हैं। वे पूरे संसार को प्रकाशित करते हैं। मकर संक्रांति अपने भीतर इसी चेतना को विकसित करने वाला पर्व है, हमारे भीतर, उसके तेज को प्रखर बनाने का पर्व।

सूर्य जैसे बादलों से ढक जाता है, वैसे ही हमारी आत्मा भी काम, क्रोध और अहंकाररूपी बादलों से आच्छादित रहती है। बाहरी सूर्य का प्रतीक है-बाह्यसूर्य, जो कि जगत को प्रकाशित करता है। यह सूर्य उदय-अस्त होता है लेकिन हमारा आत्मसूर्य सदैव उदित रहता है। महाप्रलय में सूर्य का लोप हो जाता है, लेकिन जीवात्मा यथावत रहती है।

सूर्य की ही तरह हमें अपना आत्म तेज विकसित करना चाहिए ताकि निराश जनों के मन में भी उत्साह और आनन्द भर सकें। मनुष्य के जैसे कर्म, चिंतन और संस्कार होते हैं, वैसी ही उसकी गति होती है। उन्नत कर्म, अच्छी संगति और उच्च चिंतन ही मानव को प्रगति के पथ पर अग्रसर करते हैं। सूर्य से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें विकारों से मुक्त करे।

www.thearyasamaj.org

शारदा देश कश्मीर–जो कभी संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा

–डॉ. भवानीलाल भारतीय

आज जम्मू व कश्मीर राज्य की राजभाषा उर्दू है। सच तो यह है कि उर्दू भारत और पाकिस्तान के किसी भी प्रान्त की मातृभाषा नहीं हैं। पाकिस्तान में सिंधी, पंजाबी, बलोची तथा पश्तो भाषाओं का चलन है तो भारत के गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, केरल, तमिलनाडु तथा आंध्र में वहाँ के मुसलमान गुजराती, मराठी, बंगला, मलयालम, कन्नड़, तमिळ, तेलुगु आदि का प्रयोग मातृभाषा की भाँति करते हैं। दिल्ली, लखनऊ तथा हैदराबाद आदि दो–तीन शहरों की बात छोड़ दें तो उर्दू किसी भारतीय राज्य की मुख्य भाषा नहीं है। तथापि कश्मीर में हिन्दी का भी प्रचलन नहीं के बराबर है, संस्कृत की चर्चा तो दूर की बात है।

इस स्थिति में कौन इस बात पर विश्वास करेगा कि किसी समय कश्मीर राज्य संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा होगा। यहाँ उत्पन्न संस्कृत कवियों ने उच्च कोटि के काव्यों की रचना की तो यहाँ के शास्त्र मर्मज्ञ एवं साहित्य शास्त्रवेत्ता विद्वानों ने काव्य–मीमांसा में उच्च मानदण्ड स्थापित किए। यहाँ के दार्शनिकों ने प्रत्यभिज्ञा दर्शन को जन्म दिया तो इतिहासज्ञों ने कश्मीर के समसामयिक इतिहास की अपनी ग्रंथों में विवेचना की। सरस्वती की क्रीड़ा स्थली इस कश्मीर को महाकवि बिल्हण ने यदि 'शारदा देश' कहा तो यह उचित ही था, अत्युक्ति नहीं थी।

यहाँ के संस्कृत विद्वानों के नामों में भी एक विशिष्टता दृष्टिगोचर होती है। एक ओर कल्हण, बिल्हण, जल्हण, शिल्हण जैसे नाम हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं जो 'ण' वर्ण पर समाप्त होते हैं तो दूसरी ओर उव्वट, कैयट, मम्मट, रूद्रट तथा उद्भट आदि 'ट' अन्त वाले नाम हैं। इन नामों

को सुनते ही हम इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि यह व्यक्ति कश्मीर वास्तव्य है। कितनी विडम्बना है कि संस्कृत के उपर्युक्त विद्वानों की धरोहर की रक्षा करने वाले वहाँ के पण्डित वर्ग को घाटी से एक सुविचारित दुरभिसन्धि के द्वारा मुल्कबदर (देश से निष्कासित) किया गया। गुजरात के दंगों पर आँसू बहाने वालों को इस बात की क्या चिन्ता है कि कश्मीर के निवासी इन पण्डितों को अपने जन्म स्थान से क्यों हटाया गया?

प्रथम हम यहाँ के संस्कृत कवियों की चर्चा करें। गौड अभिनन्द नामक कवि ने लघु योग वासिष्ठ की रचना की। पाँच हजार से कुछ कम श्लोकों में रचा गया यह ग्रन्थ प्रसिद्ध दर्शनग्रंथ 'योगवासिष्ठ' का काव्यरूप है। 'नव साहसांक चार्ट' के रचयिता पद्मगुप्त ने अपने आश्रयदाता राजा के गुणों व शील का वर्णन इस काव्य में किया है। एक अन्य काव्य 'कुह मीमत' की रचना कश्मीर नरेश जयादित्य के प्रधान अमात्य दामोदर गुप्त ने की थी। यह काव्य लोक जीवन के उस पहलू को उजागर करता है जो वीरांगनाओं से सम्बन्ध रखता है। बालाएँ कैसा जीवन जीती थीं उसे इस काव्य में देखा जा सकता है। कश्मीर के एक नरेश मातृगुप्त स्वयं कवि थे और श्रेष्ठ काव्य रचना करते थे। यहाँ कवि भर्तृभठ के नाम का उल्लेख आवश्यक है जिसने 'हयग्रीव वध' नामक काव्य प्रसिद्ध पौराणिक कथानक को आधार बनाकर लिखा। इस काव्य में वक्रोक्तियों का प्रयोग इतना चमत्कारपूर्ण है कि काव्य मीमांसा के लेखक आचार्य राजशेखर ने उसकी विस्तृत चर्चा की है। यहाँ आचार्य क्षेमेन्द्र का उल्लेख आवश्यक है। यों तो काव्य में 'औचित्य' नामक तत्त्व का महत्त्व सिद्ध कर आचार्य क्षेमेन्द्र ने काव्य विवेचन को नया आयाम दिया था। उनका ग्रन्थ 'औचित्य विचार चर्चा' इस विषय का प्रामाणिक ग्रन्थ है। तथापि यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वयं संस्कृत के इन सिद्ध

www.thearyasamaj.org

कवियों ने रामायण मंजरी, भारत मंजरी तथा बृहत्कथा मंजरी आदि ग्रन्थों के द्वारा अपने काव्य में पुण्य को व्यक्त किया। इस प्रकार पुरातन इतिहास ग्रन्थों को नई शैली में पद्य रूप देना उनकी विशेषता थी।

क्षेमेन्द्र के अलंकार शास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थों में 'कवि कण्ठाभरण' तथा 'सुवृत्त तिलक' का उल्लेख भी आवश्यक है। उनका लिखा 'श्रीकण्ठ चरित' भक्ति प्रधान काव्य है जिसमें भगवान् शिव द्वारा त्रिपुरासुर वध के कथानक को निबद्ध किया गया है।

बिल्हण के विक्रमांकदेव चरित की चर्चा के प्रसंग में यह कहना आवश्यक है कि उसका कश्मीर को शारदा देश कहना सर्वथा उचित था क्योंकि यही वह रम्यभूमि है जहाँ सरस्वती ने अपने लीला विलास को काव्यकृतियों के माध्यम से व्यक्त किया था।

अब 'साहित्य शास्त्र' से सम्बन्धित ग्रन्थों की चर्चा करें। साहित्यालोचन के विभिन्न सम्प्रदाय प्रवर्तकों की जन्मदात्री यही भूमि है। अलंकार शास्त्र में आचार्य ममट्ट नाम सर्वोपरि है। 'काव्यालंकार' की रचना कर उन्होंने काव्य में अलंकारों के महत्त्व को स्थापित किया। आचार्य वामन ने 'रीति' को काव्य की आत्मा ठहराया- 'रीतिरात्मा काव्यस्य' और वैदर्भी, गौड़ी तथा पांचाली आदि का निरूपण किया। वामन के अनुसार अलंकारों के मूल में तीन तत्त्व प्रधान हैं - 'औपम्य' (उपमा देने वाले), अतिशय (अतिशयोक्ति पूर्णकथन) तथा 'श्लेष' - द्विविध अर्थों के बोधक शब्दों का प्रयोग। इन्हीं मूल तत्त्वों से विभिन्न अलंकार बनते हैं।

'ध्वन्यालोक' ग्रन्थ के लेखक आचार्य आनन्दवर्द्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा बताया- 'काव्यस्य आत्मा ध्वनिरिति बुधै समाम्नाय:' कहकर उन्होंने ध्वनि प्रधान काव्य को ही श्रेष्ठ ठहराया। माहिमभट्ट ने 'व्यक्ति विवेक' लिखा; रुय्यक ने

'अलंकार सर्वस्व' की रचना की तथा ध्वनि सम्प्रदाय के मूल ग्रन्थ ध्वन्यालोक की 'लोचन' नाम टीका लिखकर आचार्य अभिनव गुप्त ने साहित्य शास्त्र को एक कालजयी ग्रन्थ प्रदान दिया। यह नहीं भूलना चाहिए कि आचार्य अभिनव गुप्त मात्र साहित्य मीमांसक नहीं थे वे दार्शनिक भी थे। प्रत्यभिज्ञा नामक शैव दर्शन की स्थापना का श्रेय उन्हें ही है। यही कारण है कि कश्मीर में वर्षों तक शैव सम्प्रदाय का बोलबाला रहा। अब इस सिद्धांत की यदि चर्चा करें तो आचार्य मम्मट के 'काव्यप्रकाश' का नाम प्रथम पंक्ति में है। मम्मट ने काव्य की जो परिभाषा दी यद्यपि उसकी व्याख्याएँ आगे चलकर आचार्यों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से की तथापि उनकी दी गई काव्य परिभाषा - 'तददोषौशब्दार्थो सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' काव्य वह शब्द और अर्थ का समूह है जो दोष रहित है, यत्र-तत्र अलंकारों का उसमें प्रयोग होता है किन्तु यह अनिवार्य नहीं है। अलंकारहित काव्य भी श्रेष्ठ हो सकता है, यह अवश्य है कि वह इससे युक्त हो। कालान्तर में भट्ट लोल्लट, आचार्य शंकुक तथा आचार्य अभिनवगुप्त ने उक्त परिभाषा सूत्र की विभिन्न व्याख्याएँ कीं।

प्रायः आक्षेप लगाया जाता है कि भारत में इतिहास के प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं लिखे गये। इसके उत्तर में यदि हम कल्हण की 'राजतंरगिणी' को प्रस्तुत करें तो उक्त आक्षेप कहीं नहीं टिकता। कल्हण राजा हर्षदेव के प्रधानमंत्री थे। आठ तरंगों में निबद्ध यह इतिहास तत्कालीन शासन व्यवस्था, सामाजिक स्थिति तथा धार्मिक दशा की वस्तुनिष्ठ जानकारी देता है। अन्ततः कहना पड़ता है कि कश्मीर की नैसर्गिक सुषमा ने यदि लोगों को मुग्ध किया तो वहाँ के विद्वानों के वैदुष्य ने सारस्वत समाज को चमत्कृत किये रखा था।

3/5 शंकर कालोनी,
श्रीगंगानगर, राजस्थान

www.thearyasamaj.org

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को सादर स्मरण
(तेरहवीं पुण्यतिथि 30 जनवरी पर)

-डॉ. महेश विद्यालंकार

आर्यसमाज को अपने उदयकाल से ही अनेक संन्यासी, विद्वान्, प्रचारक, तपस्वी, त्यागी, बलिदानी, मिशनरी आदि महापुरुषों की परम्परा प्राप्त होती रही है। इसी विरासत, वसीयत और परम्परा ने ऋषि और आर्यसमाज के सिद्धान्तों, आदर्शों, कार्यों, उद्देश्यों आदि को बढ़ाया है। तभी आर्यसमाज की जीवन्त चेतना, वैचारिक क्रान्ति, विचारधारा, शक्ति एवं आन्दोलन आदि के रूप में इसकी पहचान बनी है। आर्यसमाज के अतीत का इतिहास अत्यन्त उज्ज्वल, प्रेरक, तप, त्याग सेवा, परोपकार आदि विशेषताओं से परिपूर्ण मिलता है। इसी प्रभावी आदर्श परम्परा को स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने बड़ी श्रद्धा, निष्ठा, दृढ़ता, समर्पण और त्यागभाव से निर्वाह किया है। उन्होंने महर्षि और उनके मिशन के झण्डे को सदा सबसे ऊपर रखा। उनका योगदान सदा स्मरणीय और वन्दनीय रहेगा। **स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती** को आर्यसमाज की विचारधारा पैतृक विरासत के रूप में मिली थी। उन्होंने इन्हीं संस्कारों, विचारों, आदर्शों और परम्परा को आजीवन दृढ़ता तथा स्वाभिमान से अपनी पहचान बनाकर निर्वाह किया। जीवन अनेक उतार चढ़ावों, वाद-विवादों तथा उलझनों से निकला। कभी गलत बातों, सिद्धान्त विरुद्ध तथा स्मृति विरुद्ध कार्यों से समझौता नहीं किया। कई बार स्वामी जी के जीवन में ऐसे अवसर, परिस्थितियाँ, तथा मोड़ आए, जब वे सिद्धान्तवादी आदर्शों के लिए अकेले पड़ गए, मगर समाज हित को सर्वोपरि रखते हुए पतनकारी बातों के आगे झुके नहीं। अकेले खड़े रहे। स्वामी जी के जीवन में सरलता, सादगी, निर्भीकता, सिद्धान्तप्रियता, स्पष्टवादिता, अनुशासन की कठोरता आदि गुण

www.thearyasamaj.org

थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज, वेदप्रचार तथा ऋषि मिशन में आहूत कर दिया। उन्हें व्यक्ति नहीं, सिद्धान्त प्रिय थे। उनके जीवन की अनेक सैद्धान्तिक घटनाएँ, खट्टे-मीठे अनुभव और ऋषि मिशन के प्रति समर्पण की भावना सदा प्रकाश स्तम्भ बनकर आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। पूर्व नाम श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित जी 1947 दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज में काम करते थे। तत्कालीन वायसराय ने कॉलेज में आना था। कॉलेज के प्रिंसिपल ने श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित जी को कहा आप कल खादी का धोती कुर्ता पहनकर न आना कहीं वायसराय नाराज न हो जाय। नौकरी से हटाये जाने के खतरे को जानते हुए भी स्वाभिमान एवं अस्मिता की रक्षा हेतु अगले दिन कॉलेज में धोती कुर्ता पहनकर गए। उन्होंने खादी पहनने का व्रत आजीवन निर्वाह किया। एक बार पानीपत कॉलेज में शासन की परवाह किए बिना, उन्होंने ओ३म् ध्वज को राष्ट्रीय ध्वज से ऊँचा मानते हुए उतारने से मना कर दिया। ओ३म् तो सर्वोपरि और सृष्टि का रक्षक है। कालेज के उत्सव पर तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई आमन्त्रित थे। उन्हें आने में पाँच मिनट की देरी हो गई। किन्तु बिना प्रतीक्षा किए प्रिंसीपल दीक्षित जी ने कार्यक्रम आरम्भ कर दिया। वचन और समय की प्रतिबद्धता उनके चरित्र की विशेषता थी। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज उनकी श्वासों व धड़कनों में बसा था। पानीपत का बड़ा आर्यसमाज उनकी सक्रियता तथा योगदान का सदा ऋणी रहेगा। पारिवारिक दायित्वों, कर्त्तव्यों आदि से निवृत्त होकर 27 जुलाई 1980 में बिना घोषणा, धूम--धड़ाके के चुपचाप दीनानगर मठ गए। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से संन्यास दीक्षा लेकर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती बन गए। गीता का कर्मदर्शन सिद्धान्त उनका जीवन दर्शन बन गया। वे उच्चकोटि के

विद्वान्, विचारक, सिद्धान्तमर्मज्ञ, दार्शनिक एवं शास्त्रीय परम्परा के ज्ञाता थे। उन्होंने वैदिक चिन्तन को आधार बनाकर विविध विषयों पर जो साहित्य सृजन किया है वह सदा विद्वत्समाज में पठनीय, स्मरणीय और वन्दनीय रहेगा। सत्यार्थ भास्कर, भूमिका भास्कर, संस्कार भास्कर, अनादि तत्त्वदर्शन, तत्वमसि, आध्यात्म मीमांसा आदि ग्रंथ ऋषि एवं आर्यसमाज के गौरव को सदा समुन्नत बनाये रखेंगे। वे दिन रात लेखन में लगे रहे। पढ़ते-लिखते अन्तिम समय में वे अपनी आँखों की ज्योति भी गवाँ चुके थे। मैंने स्वयं उन्हें बड़ी तत्परता, निष्ठा तथा लगन से लिखते देखा है। वे कहा करते थे। ऋषि का ऋण उतार रहा हूँ। सच्चे अर्थों में स्वामी जी लेखनी और वाणी से ऋषि ऋण उतार गए। आज इस जीवन, लगन व भाव भावना के दीवाने विद्वान संन्यासी कितने हैं? उन्होंने कभी एक रुपया तक पुस्तकों की रॉयल्टी न माँगी और न ली! न कभी अपनी पुस्तकों को बेचने के विज्ञापन दिए और न ही प्रयास किया। जो किया इदं दयानन्द और इदं आर्यसमाज की भावना से समर्पित किया। स्वामी जी ने आर्यसमाज के सभी प्रदर्शनों, सत्याग्रहों व आन्दोलनों में सक्रिय अपनी विद्वता एवं कर्मठता का परिचय दिया। हैदराबाद सत्याग्रह में पूरा समय जेल में रहे। आजादी के बाद भारत सरकार ने सभी सत्याग्रहियों को ताम्रपत्र व पेंशन देकर सम्मानित किया। स्वामी विद्यानन्द जी ने सम्मान तथा पेंशन लेने से मना कर दिया। "मैं किसी पुरस्कार व पेंशन के लिए जेल नहीं गया था, मैंने तो आर्यसमाज तथा देश सेवा के प्रति कर्तव्य निर्वाह किया है।" स्वामी जी अनेक शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक संगठनों आदि में रहते हुए, सदा अपनी ब्राह्मणवृत्ति को जागृत रखा। सेवा निवृत्ति पर जो पैसा मिला, उसे आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली में दस हजार और दस हजार बड़ा बाजार पानीपत में प्रति वर्ष

www.thearyasamaj.org

एक वैदिक विद्वान को सम्मानित किया जाए, इस भावना में जमा करा दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय संस्कृति विभाग में वेदाध्ययन करने वाले छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था करवाना स्वामी जी का ही प्रयास था। मुझे स्मरण है जब स्व. पं. उदयवीर जी शास्त्री, दर्शनाचार्य गाजियाबाद में अन्तिम अवस्था में थे। स्वामी विद्यानन्द जी को पता चला, तुरन्त अपने पास से पाँच हजार रुपये भिजवाये। सत्यार्थप्रकाश न्यास द्वारा स्वामी जी को इक्यावन लाख राशि वैदिक मनीषी के सम्मानार्थ भेंट की गई। स्वामी जी ने तत्काल वहीं पर साहित्य प्रकाशन एवं शोध हेतु दे दी। मुझे स्वांमी जी का स्नेहाशीर्वाद प्राप्त रहा। मैं उनके पास कभी घन्टों बैठता था। आर्यसमाज का इतिहास, परम्परा, सिद्धान्त, महापुरुषों के तप त्याग बलिदान एवं शास्त्रीय चर्चा होती थी। इन विषयों में मैंने स्वामी जी से बहुत कुछ सीखा और पाया है। मैंने स्वामी जी को आर्यसमाज की दशा-दिशा और अर्घःपतन पर भाव विह्वल होकर कई बार रोते देखा है। जब वे वर्तमान आर्यसमाज की चर्चा करने लगते थे तो निराश हताश भी हो उठते थे। उठते-बैठते-सोते-जागते उन्हें आर्यसमाज की ही चिन्ता परेशान करती थी। वे अपने कष्ट व पीड़ा के लिए कभी नहीं रोये। ऐसे सुयोग्य विद्वान संन्यासियों का आज बड़ी तेजी से आर्यसमाज में अभाव होता जा रहा है। यह चिन्तनीय एवं विचारणीय है। स्वामी जी के साथ बहुत यादें, बातें, और स्मृतियाँ जुड़ी हैं। विस्तारभय से संकेत नहीं कर पा रहा हूँ। इस पुण्य स्मृति दिवस पर मैं स्व. स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को समूचे आर्यजगत् की ओर से बड़ी श्रद्धा भावना से स्मरण एवं नमन करता हूँ।

बी जे. 29, पूर्वी शालीमार बाग,
दिल्ली-88

www.thearyasamaj.org

मेरे सपनों का भारत

-स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री

[31 दिसम्बर को अपने समय में न केवल आर्यसमाज, अपितु संसद और देश के सर्वश्रेष्ठ व सर्वप्रिय नेता श्री प्रकाशवीर शास्त्री का जन्मदिवस था। उसी की स्मृति में उनका यह प्रसिद्ध व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख पढ़ें।]

उत्तर में इसके मस्तक पर
हिमगिरि देता हिम का चन्दन
दक्षिण में हिन्द महासागर है
करता इसका पदवंदन।
पूजता भुज दायीं इसकी
कश्मीर लिये केसर कंचन
इसकी बायीं भुज-छाया में
रहता है ब्रह्मदेश पावन।
हम हिन्दी भाषी हिन्दू हैं
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

कुछ दिन पूर्व की बात है कि शिवरात्रि से आठ या दस दिन पूर्व हैदराबाद राज्य के अन्तर्गत कल्याणी के पास नरेन्द्र निकेतन जानापुर के वार्षिक समारोह में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। जाते समय मार्ग में इटारसी स्टेशन पर ज्योंही गाड़ी ठहरी, एक यात्री मैले कपड़ों में लिपटी अपनी गोल गठरी को हाथों में लिए और श्रद्धा को हृदय में संभाले झिझकता-सा आकर हमारे डिब्बे में बैठ गया। बैठकर गहरी साँसें लेता हुआ वह ऐसा प्रतीत होने लगा मानो बहुत बड़ी लड़ाई जीत कर कोई सिपाही अपनी सफलता पर सन्तोष प्रकट कर रहा हो और फिर यह भी सही, इटारसी स्टेशन पर ग्रान्डट्रंक एक्सप्रेस में जगह पाना एक लड़ाई ही जीतना है। थोड़ी देर में मेरे साथ बैठे एक सज्जन, जो ट्रेन रुकने पर चाय-पानी पीने चले गये थे, आये और भोली-भाली आकृति वाले उस व्यक्ति को सँकुचाया-सा नीचे बैठा देख बोले-यह दूसरा दर्जा है, कहाँ आ बैठे? वह बोला मेरा टिकट भी इसी दर्जे का है साहब। कहीं ऐसा न हो कि भीड़ से परेशान होकर यह यहाँ आ बैठा हो और टिकट-चेकर के देखने पर इस क्लास का टिकट न

www.thearyasamaj.org

निकले और अधिक परेशानी में पड़ जाय। ऐसा सोच कर वह सज्जन बोला- कहाँ है तुम्हारा टिकट? ग्राम्य वेषभूषाधारी उस यात्री ने अपनी धोती की गाँठ से खोलकर वह टिकट दिखाया जो सचमुच ही सेकेण्ड क्लास का था।

वह सज्जन जिन्होंने टिकट देखा था अपनी झेंप-सी उतारते हुए बोले-तो फिर नीचे क्यों बैठे हो भाई! आओ ऊपर बैठो। कहाँ जाना है? क्या मद्रास जा रहे हो? उसके मद्रास तक के टिकट को देख उन्होंने पूछा। वह बोला नहीं जाना तो मद्रास से भी आगे रामेश्वरम जी है। इतनी लम्बी यात्रा की कैसे सोची? पूछने पर उसने अपनी गठरी की ओर संकेत देते हुए कहा-जल चढ़ाने जा रहा हूँ। प्रयाग से मद्रास तक का वह टिकट था, इसी से उन्होंने फिर पूछा कि त्रिवेणी का जल इसमें है क्या? वह बोला बाबूजी! जल तो यह गंगोत्री से लाया हूँ। डिब्बे में बैठे और भी पाँचों यात्रियों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने यह कहा जल गंगोत्री का है और चढ़ाने जा रहा हूँ रामेश्वरम। पहले बैठे यात्रियों में इस बात को सुन कर आश्चर्य-श्रद्धा और भक्ति की चर्चाएँ आरम्भ हुईं। मेरी बगल में बैठे एक महाशय बोले अभी पता नहीं कब हमारे देश से यह धर्म जायेगा। अंग्रेजों से पीछा छुड़ाया, पर यह धर्म अभी हाथ धोकर पीछे ही पड़ा हुआ है। मैं सुनकर हँसा और बोला श्रीमान्! आपने धर्म को केवल इतना ही अभी तक समझा है क्या? मुझे धर्म के उन मूलभूत सिद्धान्तों को तो आपके सामने खोलने की आवश्यकता है नहीं परन्तु जहाँ तक गंगोत्री का जल और रामेश्वर पर चढ़ाने वाले इस यात्री की धार्मिक निष्ठा का प्रश्न है, आप इसके पीछे खड़ी भारतमाता की उस सजीव प्रतिमा के भी तो दर्शन कीजिए जो अभी अपने दो कोनों की अखण्डता को सुरक्षित रख महाकवि कालिदास की अमर लेखनी से निकली उस अक्षुण्ण परम्परा की स्मृति हरी कर रही है-

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः
पृथिव्या इव मानदण्डः। (कुमार संभव)

www.thearyasamaj.org

गौरीशंकर और कैलाशरूपी मणियों से मंडित पर्वतराज हिमालय को भारतमाता का राजमुकुट पहना कर और सिन्धुराज हिन्द-महासागर का चरण पखारने का भार सौंपकर विधाता अपनी इस प्यारी पुत्री पर इतने प्रसन्न हुए जो सर्गारम्भ में कुछ क्षणों के लिए अपनी तूलिका को बाह्य निर्माण से हटा आन्तरिक निर्माण में लग पड़े। एक ओर से पर्वतों को सन्तरी बनाकर खड़ा कर दिया और तीन ओर महासागर को उद्वेलित रूप देकर भारत भू की सुरक्षा का प्राकृतिक दुर्ग बनाया। आन्तरिक निर्माण में विधाता ने दक्षिण में समुद्रों के किनारे नारियल की पंक्ति, गुजरात की वन्य और मानवीय सुषमा, राजस्थान की वीरप्रसविनी मरुभूमि, असम के जंगल, शस्यश्यामला बंगभूमि को जहाँ बनाया वहाँ विराम के क्षणों में हिमालय की उपत्यका में बैठकर धरती के स्वर्ग कश्मीर का भी निर्माण किया जिसे देखकर हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री श्रीधर पाठक ने लिखा था।

प्रकृति यहीं पर बैठ निज रूप संवारति-
पल-पल पलटति वेश छटा अनुपम नितधारति।

फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने प्रकृति की इसी क्रीड़ास्थली को देख कर शताब्दियों पूर्व कहा था- काश्मीर की सुन्दरता के विषय में मैंने जो कुछ आज तक सुना था और अनुमान किया था उससे भी बढ़कर मनोरम इसे पाया। यह देश अनुपम है। संसार का कोई देश इसकी समता नहीं कर सकता।

भारत राष्ट्र प्रकृति की विशेषताओं और विचित्रताओं का भी केन्द्र है। इसमें जहाँ एक ओर संसार की सबसे अधिक वर्षा चिरापूंजी में होती है वहाँ राजस्थान के निवासी एक-एक बूँद को तरसते हैं। एक ओर महान् हिमालय जहाँ सदैव बर्फ से ढका रहता है वहाँ पंजाब, सिंध और दिल्ली ग्रीष्म में आग की भट्टी बने रहते हैं। कोई देश ऐसे हैं जहाँ निरे भूरे ही भूरे वर्ण के आदमी रहते हैं, कोई ऐसे हैं जहाँ इतने काले रहते हैं जिन्हें देखकर प्रतीत होता है परमात्मा ने सारा कालिमा-कोष यहीं लुटा दिया है। कोई देश ऐसे हैं जहाँ निरी चपटी नाकों वाले रहते हैं, और कोई देश ऐसे हैं जहाँ भूरी ही आँखों वाले

www.thearyasamaj.org

रहते हैं। कोई देश ऐसे भी इसी भूमण्डल पर हैं जहाँ केवल शीत ही शीत ऋतु बारहों मास रहती है और कोई ऐसे हैं जहाँ छै-छै मास तक सूर्य के दर्शन नहीं होते। पर प्रकृति ने भारत-भूमि को इस सब की विचित्रताओं का भण्डार बनाया है। काले भी इसमें और गोरे भी इसमें, चपटी नाक वाले और भूरी आँख वाले भी इसमें, नुकीली नाक और काली पुतली वाले भी इसमें हैं। ग्रीष्म-शीत और वर्षा तीन तो मुख्य ऋतुएँ चार-चार मास बाद पलट-पलट कर आती ही रहती हैं और यदि सूक्ष्म भेद किये जायें तो छै ऋतुएँ यहाँ के मौसम में परिवर्तन करती रहती हैं। बहुत से देश ऐसे भी है जहाँ सप्ताह और महीनों व्यतीत हो जाते हैं पर सूर्य के दर्शन नहीं होते, जिस दिन सूर्य निकलता है उस दिन रगशालायें खोल दी जाती हैं, मंगल दिन के नाम पर स्कूल कॉलेजों के अवकाश हो जाते हैं परन्तु यहाँ तो हर बारह घण्टे बाद सूर्य और चन्द्रमा गगनमण्डल को अपनी क्रीड़ास्थली बनाकर भारतवासियों का मनोरंजन करते रहते हैं। भजन, पूजा-पाठ और योगाभ्यास करने को जहाँ पर्वतों की कन्दरायें और गंगा-यमुना सिन्धु के तट हैं वहाँ तलवार खनखनाने को हल्दी-घाटी-कुरुक्षेत्र-कलिंग और पानीपत के मैदान भी हैं। समय-समय पर जहाँ इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगिराज कृष्ण जैसी महान् आत्मायें, गौतम-कपिल-कणाद-वशिष्ठ सरीखे ऋषि और शंकर-बुद्ध-दयानन्द जैसे कर्मयोगी समाज सुधारक आते रहे हैं वहाँ अर्जुन-भीम-राणा और शिवा जैसे वीर भी इस माँ के मस्तक को उठाने में अपने को अर्पण करते रहे हैं।

कल के वह मुसलमान जिन्होंने इस देश में पाकिस्तान बनवाया और आज भी मजहब की आड़ में आकर अभारतीयता फैलाने में ही अपना सब कुछ समझे बैठे हैं, उनमें रहीम-रसखान-जायसी और रजिया बेगम जैसे दो-चार नहीं अपितु साढ़े तीन सौ के लगभग उन मुस्लिम कवियों की स्मृति दिलाकर मैं कुछ नहीं कहना चाहता जिन्होंने भारत को अपना देश, यहाँ के आदर्श पुरुषों को अपना आदर्श पुरुष और यहाँ की गंगा-यमुना को अपनी नदियाँ

www.thearyasamaj.org

मानकर भारत की सीमा में अपने राष्ट्र-प्रेम का परिचय देकर हिन्दी का गौरव बढ़ाया था, अपितु कल के उन कवि और मुस्लिम रहनुमाओं की चर्चा करना आवश्यक समझता हूँ जो भारत को अपनी पितृभूमि भी मानते हैं। सर अल्लामा इकबाल की कविताओं का संग्रह जो बांगे दरां नाम से है उसमें हिमालय को सम्बोधित करके एक कविता लिखी है जिसके कुछ पंक्तियाँ यह हैं-

ऐ हिमालय! ऐ फ़सीले किश्वरे हिन्दोस्तां!
चूमता हे तेरी पेशानी को झुककर आसमां।।
ऐ हिमालय! दासतां उस वक्त की कोई सुना।
दास जिस पर गाजये जंगे तकल्लुफ का न था।।

हिमालय को पुरानेपन की उसकी याद दिलाते हुए सर इकबाल पूछते हैं- ऐ नगाधिराज! उस दिन की कोई चर्चा तो सुनाओ जब मानव जाति के आदि पुरुष हजरत आदम ने तुम्हारी गोद में जन्म लिया था। इस्लामी धर्म ग्रन्थों के आधार पर हजरत आदम संसार के सबसे पहले व्यक्ति थे जिनकी एक पसली निकाल कर खुदा हव्वा (नारी जाति की आदि जननी) को जन्म दिया। इन्हीं हजरत आदम के वंश में आगे चलकर इस्लाम मत के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब के पुरखा भारतीय ही थे। इसी को जोश मलीहाबादी ने भी लिखा है-

मैं हिन्दी हूँ बना है हिन्द की मिट्टी से तन मेरा।
है रुमोशाम व चीन मेरे अजम मेरा अदन मेरा।
शमीमे आसमानी से महकता है चमन मेरा।
जो मुहब्बत हजरते आदम का है वह वतन मेरा।
जहाँ शागिर्द हैं उस्ताद हैं हिन्दोस्तां वाले।
हमारी खोशः चीनी करते थे छुपकर जहाँ वाले।
सिवा दो चार तिनकों के था क्या उनके नशेमन में।
हमारे बाग की कलियाँ भरी जाती थीं दामन में।
मकां हमने बनाया चीन की दीवार में पहले।
फली फुलवारियाँ ईरान के गुलजार से पहले।
बसाया शहर हमने रूस के दरबार से पहले।
यहाँ खनका कटोरा मिश्र के बाजार से पहले।

इस कविता में भी जहाँ भारत की प्राचीनता को स्मरण किया है वहाँ हजरत आदम ने स्वर्ग से उतर कर जिस भूमि पर पदार्पण किया उसको भारत भूमि ही कहा है। कवियों के अतिरिक्त विद्वान् मुसलमान भी इस सत्य को स्वीकार करते हैं। मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी ने हिन्दुस्तानी एकाडमी इलाहाबाद में मार्च सन् 1929 में कई व्याख्यान दिये थे जो बाद में 'अरब और हिन्द के तअल्लुकात' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए। उसके पृष्ठ 1 और 3 की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं जिनसे वह बात और भी स्पष्ट हो जाती है।

'हदीसों और तफसीरों में जहाँ हजरत आदम का किस्सा है वहाँ मुत्तअदिद रिवायतों में यह बयान आता है कि हजरत आदम जब आसमान की जन्नत से निकाले गये तो वह इसी जमीन की जन्नत 'हिन्दुस्तान जन्नत निशान' में उतारे गये। मीर आजाद विलग्रामी ने सिबहतुल मिर्जानफी आसार हिन्दुस्तान में कई सफे हिन्दुस्तान के इन फजायल बयान के नजर किये हैं और उसमें यहाँ कहा है- जब आदम सबसे पहले हिन्दोस्तान में उतरे और यहाँ इन पर बही आई तो यह समझना चाहिये कि यह ही एक मुल्क है जहाँ खुदा की पहली बही नाजिल हुई। और चूंकी नूरे मुहम्मद हजरते आदम की पेशानी में अमानत थी इससे यह साबित होता है कि मुहम्मद रसूल अल्ला का इब्तेदाई जुहर इसी सर जमीन में हुआ। इसलिए मुहम्मद साहब ने फरमाया कि मुझे हिन्दोस्तान की ओर से रूहानी खुशबू आती है। इसी कारण सय्यद सुलेमान नदवी ने यहाँ तक कहा है हिन्दोस्तान मुसलमानों का जीता हुआ नहीं अपितु पिदरी (पैतृक) मुल्क है।

श्री ताराचंद ने 'इन्फ्लुएन्स ऑफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर' नाम की अपनी पुस्तक में लिखा है- भारत और फारस की खाड़ी के बीच घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध था। व्यापार के साथ विचारों का भी लेन-देन न हुआ हो यह भला कैसे सम्भव हो सकता है। यह बात तो युक्ति-संगत है। जब भारतीय इतिहास और तलवार, भारतीय सुवर्ण और रजत जैसी भौतिक उपयोग की वस्तुएँ, चित्रित मेहराब तथा बीच में उभरे हुए गुम्बद सी कलात्मक वस्तुएँ फारस और ईराक पहुँच गई थीं तब भारत

के दार्शनिक विचार भी वहाँ अवश्य पहुँचे होंगे?
अरब लोग आरम्भ काल से ही भारतीय साहित्य और विज्ञान से सम्पर्क स्थापित कर चुके थे। हिजरी सन् की दूसरी शताब्दी में ही उन्होंने बौद्ध ग्रन्थों का अनुवाद भी कराया था। किताबुलवुद और बिलावा एवं सिन्द हिन्द (सिद्धान्त) और शुश्रुद (सुश्रुत) तथा स्रक (चरक) जैसे ज्योतिष और आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ, कलीला-दमनह (पंचतन्त्र) और किताब सिन्दबाद जैसे कथाग्रन्थ तथा तर्कशास्त्र एवं रणविज्ञान विषयक ग्रन्थ इसके उन्नत प्रमाण हैं। अलनादीम्, अल् अशरी अलेबेरूनी, शाहरास्तनी आदि लेखकों ने भारतीय धर्मों और दार्शनिक पद्धतियों पर अपनी पुस्तकों में विस्तार के साथ विचार किया है।
ईसाई मत भी भारत का बहुत बड़ा ऋणी ही नहीं, अपितु भारत यीशूभक्त संसार का ज्ञान-गुरु भी है। ईसा के जीवन के वह कई वर्ष जिनके लिए आज तक भी ईसा के उपासक अन्धेरे में हैं, उनके सम्बन्ध में नोटविच नामक अन्वेषणकर्ता का हस्तलिखित वह ईसा का जीवन-चरित्र जो तिब्बत के किसी मन्दिर में मिला है, प्रमाण है। यीशुमसीह भी अपने जीवन के कई वर्षो में बिहार-वाराणसी आदि स्थानों में रहे जहाँ से बुद्ध की शिक्षाओं का उन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। पारसी और यहूदी मतों पर तो स्पष्ट हमारी छाप है। उसकी व्याख्या में मैं यों नहीं जाता क्योंकि वह विषय बहुत लम्बा हो जायेगा। पर इन सब बातों से यह तो स्पष्ट है कि भारत आदि काल से ही धर्म और संस्कृति का केन्द्र रहा है और इसी भारतोद्यान ने सुरभित दो-दो चार-चार पुष्पों को लेकर संसार ने कभी अपने घरों को सुगन्धित और सुशोभित किया था। संसार के सब ही मुख्य विद्वान् और बातों में चाहे कितनी ही भिन्नता रखते हों परन्तु यहाँ आकर सब एक हैं- "संसार के पुस्तकालय में सबसे पुरानी पुस्तक ऋग्वेद है और सबसे पुराना पर्वत हिमालय है।" इसी महान् ज्ञान भण्डार में जहाँ यह लिखा है कि पृथ्वी का राज्य मुकुट किन्हीं दैवीय हाथों से आर्यों के मस्तक पर आदि सृष्टि में यहीं रखा गया वहाँ यह भी लिखा है "सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा" अर्थात् प्राणिमात्र

www.thearyasamaj.org

को सन्तोष की साँसे लेने का अवसर प्रदान करने वाली वैदिक संस्कृति भी यहीं की निधि है। भारत का इतिहास मानव जाति का इतिहास है। जिस समय विश्व के मानचित्र में धुंधले बादल मण्डरा रहे थे उस समय भारतीय आकाश में सभ्यता का सूर्य अपनी किरणें छिटका रहा था जिसे स्मरण कर विश्व कवि टैगोर विभोर होकर गा उठे थे-

प्रथम प्रभात उदय तव गगने
प्रथम सामरव तव तपोवने।
प्रथम प्रचारित तव वन भुवने
छन्द-काव्य-रस-कथा काहिनी।

भारत का निर्माण इतने व्यवस्थित और सन्तुलित ढंग से हुआ है- इसकी रक्षा के लिये जहाँ तीन ओर अथाह सागर और एक दृढव्रती हिमालय है वहाँ इसके सीमावर्ती प्रदेशों में गोरखे, मराठे, राजपूत, डोगरे व क्रान्तिकारी बंगाली और सिक्खों के आवास स्थान हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह एकीकरण का ही हामी है। बर्मा का चावल और तेल, पंजाब का गेहूँ, सीमाप्रान्त के फल और उत्तर प्रदेश का गुड़, बंगाल की जूट और सी. पी. की लकड़ी आदि ऐसी वस्तुएँ भी इसकी अखण्डता का स्मरण कराती हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से भी तो सारा भारत अखण्डता के सूत्र में बँधा हुआ है। इस महान् देश के बौद्ध विहारों, हिन्दू-तीर्थों और शंकराचार्य के मठों को ही यदि लें और विचारकर देखें तो उसमें राष्ट्रीय एकता बोलती हुई मिलेगी। पौराणिक काल, जिसके लिये उपराष्ट्रपति माननीय डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी हिन्दुओं का जीवन-दर्शन नामक पुस्तक में लिखा है कि वह द्रविड़ संस्कृति के पश्चात् का काल है जिस पर उसका प्रभाव हो चुका था, उस काल को स्मरण करने वाला भी हिन्दू अपनी अखण्ड राष्ट्रीयता का पाठ ब्राह्ममुहूर्त में उठकर स्नान करते समय अथवा अन्य अवस्थाओं में पुराण के उन श्लोकों में पर्वत-नगर और नदियों के स्मरण द्वारा कर ही लेता है-

महेन्द्रो मलयः सह्यः श्रुतिमानृक्षपर्वतः
विन्ध्यश्च पारिपत्रश्च सप्तैते कुल पर्वताः।
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका

पुरी द्वारवती चैव गोदावरि सरस्वति
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

भारत के कोनों में फैले हुए पर्वत, चारों और बसी हुई महानगरियाँ और किसी भी कुएँ-तालाब या नदी में स्नान करते समय सारे भारत में बिखरी हुई नदियों का स्मरण उसकी अखण्ड भारत-राष्ट्र की प्रेरणा के स्रोत हैं। भारतीय राजा-महाराजाओं ने अभिषेक में भी भारत की अखण्डता को स्मरण किया जाता था और जिस जल से राज्याभिषेक से पूर्व उन्हें स्नान करना होता था, उसमें भारत की प्रमुख-प्रमुख सब ही नदियों का जल सम्मिश्रित होता था।

शंकराचार्य मालाबार में पैदा हुए परन्तु उन्होंने बौद्ध धर्म को भारत के लिए अनुपयुक्त समझकर उसे भारत की सीमाओं के बाहर निकाल भारत के चार कोनों में चार मठ स्थापित किये। द्वारिका में शारदा मठ, जगन्नाथ में गोवर्धन मठ, 25 हजार फिट ऊँची चोटी पर बद्रीनाथ में जोशी मठ और मैसूर का श्रृंगेरी मठ उनके बुद्धि कौशल का जहाँ प्रमाण हैं वहाँ भारत की अखण्डता की रक्षा के लिए नियुक्त चार सांस्कृतिक नाके भी हैं। यों तो आदिकाल से यह राष्ट्र बहुत विशाल रहा है जिस आधार पर इसकी सीमायें निर्धारित करना सर्वथा कठिन है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में यहाँ के आर्यों ने सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य किया है, उनके तथा अन्य चाणक्य एवं शुक्राचार्य आदि नीतिवेत्ताओं के आधार पर इस विशाल राष्ट्र की चारदीवारी कभी भूमण्डल की सीमाएँ ही थीं। बाद में कुछ अपनी ही भूलों से एशिया तक ही इसकी सीमायें रह गईं जिसका परिचायक आज भी पुराना संकल्प पाठ है जिसके यह शब्द उस सत्यता का गान कर रहे हैं-

ओं तत्सदद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू (एशिया) द्वीपे भरत खण्डे.....।

जैसे आज पंजाब या बिहार को बताने के लिए भारत का अमुक प्रान्त कहा जाता है उसी प्रकार पहले भारत का संकेत

www.thearyasamaj.org

देने के लिए जम्बूद्वीप (एशिया) का एक खण्ड (भाग) भारत को कहा जाता था परन्तु बाद में आज जैसा ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ८वें समुल्लास में लिखा है- "अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध के कारण अन्य देशों में राज्य करने की कथा ही क्या कहना किन्तु आर्यावर्त्त में ही आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है वह भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है।"

इतना सब कुछ होते हुए भी अखण्ड भारत का क्षेत्रफल एक सौ सोलह करोड़ एकड़ था जिसमें सात जर्मनी, ग्यारह जापान, पन्द्रह ग्रेट ब्रिटेन बन सकते थे। आज भी खण्डित भारत जिसके विभक्त होने के बहुत गहरे घाव लगे हैं और जिसमें पाकिस्तान एक लम्बी कत्तर सी निकाल कर अलग खड़ा कर दिया गया है जिससे भारत माँ की विशाल और भव्य प्रतिमा का कुछ भाग ढका हुआ-सा दिखने लगा, उसके बहुत से प्रान्त ही बहुत से देशों से बड़े हैं। और प्रान्त तो बहुत दूर की बात हो गई, उत्तरप्रदेश का एक जिला गोरखपुर, यदि उसमें से देवरिया को न हटायें, तो फिनलैंड से बड़ा है। इतना विस्तृत भूभाग होने से भारत में यद्यपि धर्म, भाषा, सामाजिक आचार-विचार की भिन्नता-सी दिखती है परन्तु इन सबकी आधारभूत एकता कण-कण में बोलती है। दीपावली, होली, विजयादशमी और श्रावणी उपाकर्म को सारा भारत मनाकर सांस्कृतिक एकता के सूत्र को और भी सुदृढ़ करता है। भले ही नवसस्येष्टि यज्ञ (नया अन्न आने पर प्रसन्नता का पर्व) आज दूसरा रूप ले चुका है परन्तु होली में पिचकारियों से निकलती हुई रंग की फुहारें और कार्तिकी अमावस्या को द्वारिका से जगन्नाथपुरी तक धनी और निर्धनों के घर जगमग करती हुई दीप मालाएँ कहती हैं कि माला के ऊपरी फूलों की भाँति चाहे भिन्नता सी प्रान्तों में भाषा अथवा अन्य किसी आधार पर आभासित हो परन्तु भीतर का वह संस्कृति-सूत्र जिसने भारतीय मालाएँ के मनकों को माला बनाकर माँ भारती के वक्षस्थल की सुषमा बनाई हुई है, एक ही है।

www.thearyasamaj.org

गणतंत्र देश में जरूरी है समान नागरिक संहिता लागू करना

-शिवकुमार गोयल

स्वाधीन भारत में संविधान लागू हुए 66 वर्ष से ज्यादा बीत चुके हैं, किन्तु अभी तक हमारे शासक न राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान दिला सके हैं न समान नागरिक आचार संहिता लागू की जा सकी है। 'सेकुलर' राष्ट्र घोषित होने के बावजूद प्रत्येक नागरिक के लिए समान आचार संहिता लागू न किया जाना घोर शर्मनाक है।

यू.पी.ए. सरकार ने पिता की सम्पत्ति में पुत्री को समान अधिकार देने वाले विधेयक को पारित किया था किन्तु इसे भी मुस्लिमों पर लागू नहीं किए जाने का निर्णय लिया गया है। देश के कट्टरपंथी मुसलमान नेता स्पष्ट घोषणा करते रहते हैं कि वे अपने सामाजिक नियमों में सरकार का दखल स्वीकार नहीं करेंगे। वे कई-कई विवाह कर सकते हैं। जनसंख्या नियंत्रण के सिद्धान्त को वे मानने को तैयार नहीं है।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

देश के स्वाधीन होने के बाद यह आवश्यक था कि देश के प्रत्येक नागरिक के लिए समान आचार संहिता लागू की जाए। संविधान के अनुच्छेद 44 में कहा गया था कि सरकार को प्रत्येक नागरिक के लिए एक समान आचार संहिता लागू करनी चाहिए किन्तु जब कभी समान नागरिक संहिता लागू करने का प्रश्न खड़ा होता है, मुस्लिम व ईसाई वोटों के लालची कांग्रेस तथा अन्य कथित सेकुलर दल मुल्ला-मौलिवियों के स्वर में स्वर मिलाकर इसका विरोध शुरु कर देते हैं।

23 जुलाई 2003 को सर्वोच्च न्यायालय ने एक मामले में निर्णय देते हुए कहा कि यह अत्यन्त दुःख की बात है कि स्वाधीनता के इतने समय बाद भी संविधान के नीति-निर्देशक सिद्धान्तों के तहत आने वाले अनुच्छेद 44 पर अमल नहीं हो सका है। उच्चतम न्यायलय का मानना है कि समान नागरिक संहिता लागू करने के लिए संसद को कानून बनाना चाहिए क्योंकि इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलेगा।

सर्वोच्च नियायालय के इस महत्त्वपूर्ण निर्णय के आते ही 'आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड' तथा कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवियों ने बावेला मचाना शुरू कर दिया कि मुसलमान इसे स्वीकार नहीं करेंगे। सबसे ज्यादा शर्मनाक बात तो यह है कि कांग्रेस, समाजवादी पार्टी तथा कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय का विरोध किया। एक ओर कांग्रेस तथा तथाकथित प्रगतिशील राजनीतिक दल यह मानते रहे हैं कि मुस्लिम निजी कानून महिलाओं के साथ भेदभाव करते रहे हैं। किन्तु जब उन कानूनों में परिवर्तन का मुद्दा आता है तो वे नेता मुस्लिम वोटों के लालच में सुधार का विरोध करने में शर्म महसूस नहीं करते।

देश के स्वाधीन होने के बाद संसद में हिन्दू कोड बिल लाया गया। इसके अंतर्गत हिन्दू समाज में विवाह के बाद विवाद होने पर तलाक को वैध करार दिया गया। धर्म संघ के मंच में स्वामी करपात्री जी महाराज ने हिन्दू कोड बिल का घोर विरोध किया। तमाम शंकराचार्य तथा अन्य धर्माचार्य भी इसके विरोधी थे। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भी मानते थे कि हिन्दू समाज में तलाक जैसी परिवार को तोड़ने वाली प्रवृत्ति नहीं अपनाई जानी चाहिए। उन्होंने हिन्दू कोड बिल पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने किसी के विरोध की चिन्ता न कर हिन्दू कोड बिल पारित कराकर ही दम लिया। दूसरी ओर नेहरु जी जैसे धर्मनिरपेक्षता के प्रबल समर्थक कभी यह साहस नहीं दिखा पाए कि मुस्लिम कोड बिल पारित कराकर मुसलमानों में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों का निराकरण करा सकें।

8 नवम्बर 1947 को संविधान सभा की बैठक में जेड. एन. लारी और हुसैन इमाम ने मुस्लिमों के लिए किसी भी तरह का कानून बनाने का विरोध किया था। अपने को कम्युनिस्ट तथा प्रगतिशील बताने वाले हसरत मोहानी तक ने कहा था - "यदि कोई बदलाव करने का प्रयास किया गया तो मुस्लिमों के प्रबल विरोध का सामना करना पड़ेगा।

सन् 1961में नेहरू जी ने मिस्र, ट्यूनिसिया तथा पाकिस्तान में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड में किए गए संशोधनों के तहत कानून मंत्रालय से अपने सुझाव देने को कहा। इस सम्बन्ध में सरकार ने राव समिति का गठन भी कर दिया। जमीयत-अल-उलेमा, जमाते-इस्लामी तथा अन्य मुस्लिम संस्थाओं ने इस पर बावेला मचाना शुरू कर दिया। जुलाई सन् 1963 ई. में इस मुद्दे पर बातचीत के लिए केन्द्र सरकार के मुस्लिम मंत्रियों तथा सांसदों की एक बैठक में कहा गया कि सरकार को मुस्लिम पर्सनल लॉ में सुधार के लिए कोई पहल नहीं करनी चाहिए। यह कार्य मुस्लिम समुदाय पर छोड़ देना चाहिए।

कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवियों का यह दावा सर्वथा निराधार है कि मुस्लिम शरहा रसूल इस्लाम हजरत मोहम्मद के निर्देशों पर आधारित है इसलिए इसमें किसी तरह का परिवर्तन नहीं किया जा सकता। संसार में ऐसे 79 देश हैं जिनमें मुस्लिम शासन है। इनमें से केवल दो-तीन को छोड़कर सभी में शरीयत कानूनों में संशोधन किया जा चुका है। तुर्की जैसे कट्टरपंथी मुस्लिम देश में सन् 1918 में राष्ट्रपति कलाम अतातुर्क ने बहुपत्नी प्रथा को मुस्लिम महिलाओं का उत्पीड़न करने वाली बताकर पाबंदी लगा दी थी। अनेक मुस्लिम देशों में चोरी के आरोपियों के हाथ काट डालने जैसे कानून पर रोक लगाई। भारत में तीन बार तलाक-तलाक कहकर पत्नी को तलाक दे दिए जाने की प्रथा का विरोध हुआ। सन् 1985 तक मुस्लिम महिलाओं का भारतीय दंड संहिता की धारा 125 के तहत अपने पूर्व पति से गुजारा भत्ता प्राप्त करने का अधिकार था। इंदौर की 62 वर्षीया शाहबानो नामक पठान महिला को उसके वकील पति ने 30 साल के विवाहित जीवन के बाद सन् 1978 में तलाक दे दिया। सन् 1985 में न्यायालय ने उसके पति को मासिक भत्ता देने का आदेश दिया। बस इसी आदेश पर कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवियों ने बावेला मचा डाला। शुरु से संसद में प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की सहमति से कांग्रेस के सांसद आरिफ मोहम्मद खान ने न्यायालय के आदेश का

समर्थन करते हुए शाहबानो को गुजारा भत्ता दिए जाने को उचित बताया। कट्टरपंथी मुस्लिम सांसदों तथा अन्य राजनीतिक दलों ने गुजारा भत्ता दिए जाने का विरोध शुरू कर दिया। कहा गया कि भारतीय दंड संहिता की धारा 125 मुसलमानों के पर्सनल लॉ के विरुद्ध है, इसे हटाया जाए। सैयद शहाबुद्दीन जैसे कट्टरपंथी सांसदों ने भी शाहबानो के निर्णय का विरोध किया। मुल्ला-मौलवियों के दबाव मे तथा मुस्लिम वोटों के लालच में राजीव गाँधी की सरकार ने सन् 1976 में एक विधेयक पारित कर तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को पूर्व पतियों से गुजारा भत्ता पाने के अधिकार से ही वंचित कर दिया। मुसलमानों को उनके अपने कानून के नाम पर चार-चार विवाह करने की छूट है। भारत में जहाँ मुसलमान जनसंख्या बढ़ाकर इसका लाभ उठा रहे हैं वहीं अनेक हिन्दू दूसरा विवाह करने के लिए इस्लाम स्वीकार करने को बाध्य हो रहे हैं।

हाल ही में प्रस्तुत किए गए देश के कुछ राज्यों के जनसंख्या वृद्धि के आंकड़ों ने राष्ट्रभक्तों को चौंका डाला है। मुसलमानों तथा ईसाइयों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है जबकि हिन्दुओं की संख्या घटती जा रही है। यदि यही दुष्चक्र जारी रहा तो भारत में हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाएँगे तथा मुसलमानों की संख्या बढ़ते ही एक नए पाकिस्तान (इस्लामिस्तान) की माँग उठ खड़ी होगी।

प्रखर सांसद श्री विजयकुमार मल्होत्रा ने संसद में आंकड़े देकर देश की अखण्डता के लिए खतरा बने जनसंख्या असन्तुलन की ओर संसद का ध्यान आकर्षित कराया था। सेकुलरिस्ट दल उसके बावजूद न समान आचार संहिता बनाने के विषय को गम्भीरता से लेने को तैयार हैं न बंगलादेशियों की घुसपैठ के खतरे को गम्भीरता से ले रहे हैं। एक तरफ गैर हिन्दुओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है दूसरी ओर बंगलादेशी घुसपैठिये राजधानी दिल्ली तक अड्डे बनाकर हिन्दुओं को चुनौती दे रहे हैं। इस खतरे को गम्भीरता से न लेने का घातक परिणाम पूरे राष्ट्र को भुगतना होगा।

www.thearyasamaj.org

Caste in the Rig Vedic Society

-N.K. Chaudhary

There is difference of opinion among the scholars with regard to the existence or non-existence of the caste system in Rig Vedic society. The tenth Mandala of the Rig Veda refers to four castes. But it it pointed out that the tenth Mandala is a later addition and does not belong to the period when most of the RigVeda was written.

The Sanskrit word Varna is often confused with caste.

Varna stands for class and not Jati or caste:

Ther term Varna in RigVeda refers to the Brahmin, Kshatriya, and the Vaishya. In one of the hymns in RigVeda. It is stated, "I am a poet, my father is a doctor and mother is a grinder of corn." It shows that there was freedom so far as choice of occupation was concerned. Heredity played no part in choice of occupation.

There are many examples of inter marriages among the different Varnas. These confirm that the Varna system practiced during the Rig Vedic era was based upon one's aptitude and natural capabilities and not on a hereditary caste structure.

Vyas is referred to as a Brahmin sage even though he was born to a fisher woman. Sage Parasara had fallen in love with Satyavati who was a fisher women. Vyas was born to Satyawati but his deep knowledge of the Vedas raised him to the status of a Brahman sage.

Valmiki was a hunter but his previous occupation was no bar to his later status being that of a Brahmin sage.

Kaurava and Pandavas were known as Kshatriyas even though they were the descendents of Satyavati.

Sage Vidure was born to a woman who was a servant in the palace.

Agastya Rishi married Lopamudra, the daughter of the king of Vidharbha. Devyani the daughter of Usanas-Shukra rishi was married to king Yayati. These examples illustrate that the rigidity in caste system which developed later on did not exist in Rigvedic times.

Yudhishthira defined Brahmin as one who is truthful, forgiving and kind. One does not become a Brahmin just because of having being born ina Brahmin family.

Manusmriti, Dashmoadhyaya, verse 335 specifically states, "Even a Shudra attains the status of a Brahmin if he is pure of heart, excels in his assigned duties, is soft spoken and devoid of personal ego."

Elsewhere Manu confirms that a person attains the status of a

www.thearyasamaj.org

Brahmin by noble actions. Similarly a Brahmin becomes a Shudra (by ignoble actions). The same applies of Kshatriyas, and Vaishyas. Manu made a clear distinction between Varna and Jati. He mentioned that there were only four Varnas where as the number of castes could be about fifty.

The story of Satyakam and sage Gautama from Chhandogya Upanishad is yet another confirmation that in Vedic Society the Vernas were determined not by heredity but competence of the individual. Staykam's mother was a servant in her young age. She was in no position to exactly specify who is his father was since she moved from house to house when Satyakam was conceived. Sage Gautam accepted Satyakam fo initiation as he had spoken the truth about his parentage. "No one like a true Brahmin would speak the truth as you have."

The statement establishes that the practice of Varna system was based on conduct and character and not birth.

Parashuram was a Brahmin by birth but a Kshatriya by profession. In the RigVedic society the group of people who busied themselves in intellectual pursuits and priestly duties were classed as Brahmins. Those who took to fighting were the Kshatriyas and those who were busy in agriculture and industrial occupations were grouped as Vaishyas.

Vedic philosophy accepts that the same atman dwells in the hearts of all beings. In the face of this doctrine, there can be no absolute distinction between individuals. The concept of different castes among men can therefore have no Vedic sanction.

When and how did the Verna system degenerate into a heredity based caste system?

Caste is a Portuguese word meaning purity of race.

The rigidity in the system of social divisions is believed to the a product of the interaction between the Vedic society and the Dravidian society. Among the Dravidians, there existed a system of vocational castes and this influenced the Verna classification of the Vedic society.

As civilization moved up to the handicraft stage, a system of professional guilds came into existence. This new system was exploited by socio-economic elements within the society and abetted by some priests for their personal ends. The decisive factor in the growth of the caste system was professional specialization. Castes were grafted on to ancient Varnas of the Vedic era in the later Vedic period of history.

C2A/211, Janakpuri,
New Delhi-110058

www.thearyasamaj.org

ब्रह्मज्ञान की परीक्षा

आदि शंकराचार्य स्नान के लिए गंगा की ओर जा रहे थे। एक चांडाल अपने चार कुत्तों के साथ सारा रास्ता घेरे हुए था। उसे देखते ही शंकराचार्य ने ऊँचे स्वर में कहा, " दूर हटो। दूर हटो।" उनकी बात सुनकर भी चांडाल अपने स्थान से टस से मस नहीं हुआ, बल्कि शंकराचार्य से कहने लगा, "हे महात्मन, आप वेदांत के सैकड़ों वाक्यों के द्वारा ब्रह्म और जीव की एकता का प्रतिपादन करते हैं। एक ओर तो आप कहते हैं कि एक ही ब्रह्म है जो सब में है। आकाश की तरह व्यापक और शांत है। दूसरी ओर आप उस अद्वितीय ब्रह्म में भेद की कल्पना करते हैं, यह आपका मिथ्या आग्रह कैसा? आप समस्त शरीरों में स्थित ब्रह्म की अवहेलना कर रहे हैं। क्या आप जैसे अद्वैत ज्ञानी के लिए इस तरह का भेदभाव शोभनीय है?" ऐसा कहकर चांडाल चुप हो गया। उसकी बातों ने आचार्य शंकर को सोचने पर मजबूर कर दिया। उन्हें अपनी गलती समझ में आई और उन्होंने चांडाल से कहा, "आप आत्म-ज्ञानी हैं। आपका कथन पूरी तरह सत्य है।" इसके बाद आचार्य शंकर ने जिन श्लोकों से चांडाल की स्तुति की वे मनीष पंचक के नाम से प्रसिद्ध हैं। उसका भावार्थ इस प्रकार है, मैं ब्रह्म हूँ और समस्त जगत भी ब्रह्म रूप है। ऐसी जिसकी दृढ़ मान्यता है वह चांडाल हो या कोई और वह गुरु है। कथा के मुताबिक चांडाल के वेश में भगवान शंकर ही उपस्थित थे और आचार्य शंकर के ब्रह्मज्ञान की परीक्षा ले रहे थे।

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE FOLLOWING DONATIONS:

1. Shri Rampal Vidyalankar, Sarita Vihar, Delhi-110076 Rs. 500/-
2. Shri. R.C. Waswani, Bhopal, Madhya Pradesh Rs. 1000/-

Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

www.thearyasamaj.org
Date of Pubn. : 31.12.2016 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 Jan. 2017
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2017-2019

शं नो वातः पावतां शं नस्तपतु सूर्यः।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽभिवर्षेतु।। (यजु. 36/10)

ऋषिः-दध्यङ् अथर्वणः, देवता-वातादि, छन्द-विराडनुष्टुप्

अर्थ-हे सबके नियन्ता प्रभो! कृपया हमारे लिए सुखदायी, सुगन्धित, शीतल मन्द पवन सदा प्रवाहित करें। सूर्य भी हमें सुखदायक ऊष्मा प्रदान करें। ये मेघ (बादल) भी सुखप्रद गर्जन करते हुए हमेशा समय-समय पर अमृतमयी वृष्टि करके हमें धनधान्य से भरपूर करें। इस प्रकार आपकी कृपा के पात्र हम मानव सुख और आनन्द का उपभोग करें।

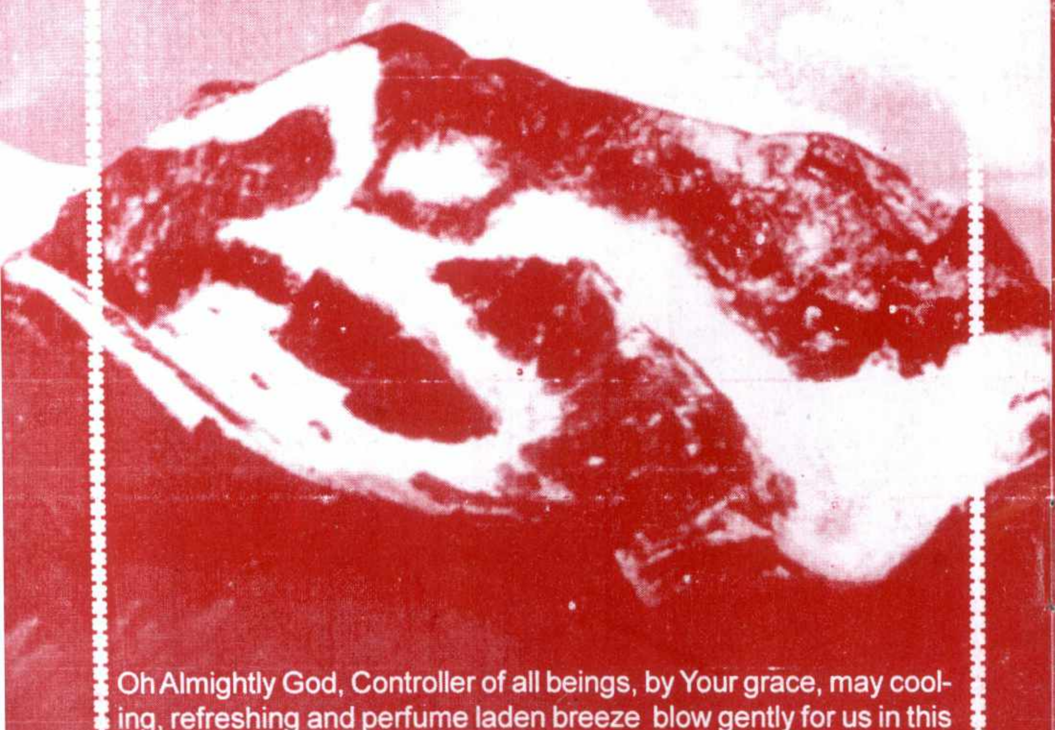

Oh Almightly God, Controller of all beings, by Your grace, may cooling, refreshing and perfume laden breeze blow gently for us in this world. May the sun also shine so as to make us happy through out our lives. May your rainclouds also thunder their pleasant roars from time to time, before pouring their happy showers of rain for our benefit always. In this way, may we, worthy of your grace, be ever happy in this world.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58